RECENT RESEARCHES in
SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES

Issue : 1, Year : 4
Apr.-May-Jun. (2017), Pages : 54 - 59
ISSN 2348 – 3318

International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

वेदों में संगीत – एक विश्लेषण

हरप्रीत कौर
एम0ए0 संगीत (गायन), नेट

Received : 14/03/2017 *1st BPR* : 18/03/2017 *2nd BPR* : 24/03/2017 *Accepted* : 28/03/2017

ABSTRACT

भारतीय संगीत विश्व का श्रेष्ठतम संगीत है। भारत से ही यह कला अन्य देशों में फैली है। ईसा के जन्म से कई शताब्दियों पूर्व यूनान के विद्वान लोग कहा करते थे कि द्योनिसोस ने, जिनका दूसरा नाम भगवान शिव है, अपने ही देश में अवतार लेकर मनुष्य जाति को नृत्य एंव संगीत कला सिखाई। प्राचीन काल में संगीत की स्थिति जानने का मुख्य स्त्रोत वैदिक काल अथवा चार वेद क्रमशः ऋग्वेद, यर्जुवेद, सामवेद, अर्थववेद हैं। इस काल में संगीत कितना उन्नत था तथा कितना प्रचलित था उसका साक्ष्य यह चार वेद है। चारों वेदों में संगीत का पुट पूर्ण रुप से नज़र आता हैं। ऋग्वेद काल से लेकर अथर्ववेद काल तक गायन शैली, नृत्य शैली तथा वाद्यों में समानता पाई जाती है। हमारे चारों वेदों में संगीत के विकास का चक्र नजर आता है। चारों वेदों में वर्णित वीणा तथा दुन्दुभि का उल्लेख इस बात का साक्ष्य है कि वाद्यों में कोई विशेष परिवर्तन वौदिक काल में नहीं हुआ है।

प्रकृति की अनुपम धरोहर में से एक अद्वितीय धरोहर है – संगीत। जब से सृष्टि का सृजन हुआ संगीत प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से अपनी विद्यता प्रस्तुत कर रहा है। इसकी उत्पत्ति कब, कैसे, किसके द्वारा हुई इन प्रश्नों के उत्तर विद्वजनों ने समय समय पर प्रदान किए हैं। प्रत्येक विद्वान अपने दृष्टिकोण से इसकी पुष्टि प्रदान कर चुके हैं। चाहे वह धार्मिक दृष्टिकोण हो या ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण हो या आध्यात्मिक, इस बात को स्पष्ट करते हैं कि संगीत सृष्टि के उद्गम के साथ ही अस्तित्व में आ गया था। समय के साथ संगीत विकसित व निरुपित होता रहा है फिर भी उसने अपनी आधारशिला का परित्याग नहीं किया।

भारतीय संगीत विश्व का श्रेष्ठतम संगीत है। यह संगीत सर्वाधिक प्राचीन तथा अनोखा माना जाता है। भारत से ही यह कला अन्य देशों में फैली है। ईसा के जन्म से कई शताब्दियों पूर्व यूनान के विद्वान लोग कहा करते थे कि द्योनिसोस ने, जिनका दूसरा नाम भगवान शिव है, अपने ही देश में अवतार लेकर मनुष्य जाति को नृत्य एंव संगीत कला सिखाई। सिकन्दर के 20 साल बाद भारत में आए मेगस्थनीज ने लिखा है कि भारतीयों के हिसाब के अनुसार 6 हजार वर्ष बीत गए थे, जबकि भगवान शिव ने स्वयं पृथ्वी निवासी मनुष्य जाति को संगीत की उन्नत विद्या सिखाई। प्राचीन काल में संगीत की स्थिति जानने का मुख्य स्त्रोत वैदिक काल अथवा चार वेद क्रमशः ऋग्वेद, यर्जुवेद, सामवेद, अर्थववेद हैं। इस काल में संगीत कितना उन्नत था तथा कितना प्रचलित था उसका साक्ष्य यह चार वेद है।

वैदिक युग को भारतीय इतिहास का प्राचीनतम युग कहा जाता है। इस युग का प्रारम्भ आर्यो के आगमन के साथ ही माना गया है, जिसमें अन्य कलाओं के साथ संगीत कला के भी उल्लेख प्रचुर मात्रा में यत्र तत्र बिखरे मिलते हैं। चूँकि वेद सांगीतिक साहित्य नहीं है अतः यह उस श्रेणी का साहित्य है जिसमें संगीत के यत्र तत्र स्फुट उल्लेख प्राप्त होते है। इन्हीं सूक्ष्म साक्ष्यों के अंतर्गत प्राचीन काल के संगीत की जानकारी प्राप्त होती है।

वैदिक युग से अभिप्राय उस दीर्घ कालखण्ड से है जिसमें चार वेद तथा उनके विविध अंगों का विस्तार हुआ है। प्राचीन आचार्यो के अनुसार वेद वाड्.मय इकाई है जिसके अंतर्गत विनियोग भेद के कारण ऋक्, यजु, साम तथा अथर्व का पृथक संहिता के रुप में निर्माण हुआ। वेद 'शब्द' संस्कृत भाषा के 'विद ज्ञाने' धातु से करणार्थ में घन् प्रत्यय लगने से ज्ञानार्थक वेद शब्द बना है। इस तरह वेद का शाब्दिक अर्थ 'ज्ञान के ग्रंथ' है। वेद प्राचीन भारत के पवितत्रा साहित्य हैं जो हिन्दुओं के प्राचीनतम और आधारभूत धर्म ग्रंथ भी है।

Vedas are also called shruti (what is heard) literature distinguishing them from other religious texts, which are called smriti (what is remembered)

वैदिक युग के इस वाड्.मय में संगीत कला व साधना के विविध उल्लेख प्राप्त होते है। विद्वानों ने वैदिक युग में प्रचलित संगीत का अध्ययन सुविधा के लिए निम्न तीनखण्डों में पृथ्क्तया किया –

- ऋक्, यजु तथा अथर्व में संगीत

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 1, Year : 4, Apr.-May-Jun. (2017), Pages : 54-59 , ISSN 2348 – 3318
हरप्रीत कौर
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

- सामवेद में संगीत
- उपनिषद् तथा शिक्षा ग्रंथों में संगीत

संगीत कला प्राचीन काल से लेकर आज तक नियमबद्ध रहा है। चाहे वह क्रियात्मक पक्ष हो अथवा शास्त्रीय प्रत्येक अंग नियमबद्धता को दर्शाता है। चार वेदों में यह नियमबद्धता तथा संगीत सत्ता पर्याप्त मात्रा में दृष्टिगोचर होती है। इस युग में 'संगीत' समाज में स्थान बना चुका था। इतिहास पर यदि नजर डालें तो हम देखेंगें कि यज्ञों आदि में मंत्रों का गायन अवश्य किया जाता था, हर मंत्र के लिए विशेश लय, छंद ताल स्वर निश्चित किए गए थे। संगीत के बिना यज्ञ अपूर्ण रहा है। संगीत को यज्ञों का एक मुख्य अंग कहा गया था जो पूर्ण रुप से सिद्ध होता है। यज्ञों के अवसर पर अग्निकुण्ड के चारों ओर नृत्यांगनाएँ नृत्य किया करता थी। वैदिक कालीन संगीत प्रत्स्वा, हुंकार, उद्गीय, प्रतिहार, उपद्रव, निधान व प्रणाव इस सात भागो में बॉटा है। स्वरों के प्रस्तुतीकरण पर विशेष ध्यान दिया जाता था। इस युग की सबसे बड़ी विशेषता स्वर साधना रही जिसमें वीणा वादन का अत्यधिक महत्व है।

Vedic musical science is one of the most sophisticated and complex in the world, where the meter and tones are linked to specific moods and times of the day ragas. It was well known to musicians of those days what effect certain sound vibrations had on humans

हर एक वेद अलग अलग तरह से गाया जाता है। वेद की हर शाखा के लिए भिन्न उच्चारण और गायन के नियम हैं। सबसे प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद में आर्यो के आमोद प्रमोद का मुख्य साधन संगीत को बताया गया है। अनेक वाद्यों का अविश्कार भी ऋग्वेद के समय में बताया जाता है।

ऋग्वेद में संगीत –

ऋग्वेद की रचना 1700 से 1100 ई0 पू0 में हुई। इसमें 10 मंडल, 1028 सूक्त व 10580 ऋचाएँ हैं। ऋग्वेद में गायत्री मंत्र हैं जो गायत्री को समर्पित हैं, इसमें देवताओं की स्तुति से संबंधित रचनाओं का संग्रह है। ऋग्वेद प्रेरक गीतों व कविताओं का संग्रह है जो कि उस काल की सभ्यता के विषय में पूर्ण जानकारी देता है। ऋग्वेद काल में गीत, वाद्य तथा नृत्य तीनों का पर्याप्त प्रचलन दृष्टिगोचर होता है। ऋग्वेद के शांखायन ब्राहमण के अनुसार इन तीनों शिल्पों का प्रयोग प्रायः अभिन्न साहचर्य के रुप में प्राप्त होता है।

त्रिवृद्वै शिल्पं नृत्य गीतं वादितमिति

अर्थात् ब्रहमण के अनुसार इन तीनों शिल्पों की गणना दैवीय शिल्पों में होती है। ऋग्वेद के अनुसार इन्द्र का कहना है कि रथकर के कौशल से निर्मित रथ चक्र जिस प्रकार संतोषजनक होता है, उसी प्रकार कुशल रुप से प्रयुक्त संगीत आकर्षण का केन्द्र बन जाता है।

ऋग्वेद काल में संगीत का साम्राज्य स्थापित हो चुका था जीवन की सूक्ष्म से लेकर दीर्घ भावनाओं की अभिव्यक्ति का साधन अथवा माध्यम संगीत ही था। ऋग्वेद में गीत के लिए गीर्, गातु, गाथा, गायत्र, गीति तथा साम शब्दों का प्रयोग किया गया है। ऋग्वेदकाल में हर परिवार में संगीत का उत्कृष्ट स्थान था। सुबह–शाम संगीत के द्वारा ही ईश्वर उपासना करी जाती थी। यह उपासना ताल स्वर में होती थी। समाज का प्रत्येक वर्ग संगीत कला से अवगत था। दैनिक जीवन में संगीत प्रायः शुभ बेलाओं के स्वागत का माध्यम था। समाज में सार्वजनिक रुप से संगीत का प्रदर्शन कम ही होता था, पर जब भी होता तो उसमें एक विशेष वर्ग प्रधान न होकर स्त्री व पुरुष दोनों समान रुप से भाग लेते थे। ऋग्वेद की ऋचाएँ स्वरलिपियों में निबद्ध होने पर स्त्रोत्र कहलाती थी। वैदिक शिक्षा के अनुसार ऋग्वेद का गायन एक ही स्वर में होता था यदि आधुनिक मतों को देंखे तो ऋग्वेद का गायन तीन स्वरों में होता था जो क्रमशः उदात्त, अनुदात्त व स्वरित हैं।

विनियोग–विभिन्नता के अनुसार इन ऋचाओं का विविध नामकरण पाया जाता है – एक शास्त्र, दूसरा स्तोत्र। होता के द्वारा जिन स्तुति मन्त्रों का कथन किया जाता है उनके लिए 'शस्त्र' पारिभाषिक संज्ञा है। वर्तमान में सौंदर्यनुभूति के लिए जिस प्रकार गायन के समय एक ही पंक्ति का गायन कई बार अलग अलग स्वरों में किया जाता है उसी प्रकार का गायन वैदिक काल में भी दृष्टिगत होता है, उस क्रिया को वैदिक काल में 'स्तोम' संज्ञा प्रदान करी गई थी। गीत के लिए 'गाथा' शब्द का प्रयोग भी किया जाता है। गाथा एक विशिष्ट तथा परम्परागत गीत प्रकार है, जिनका गायन धार्मिक तथा लौकिक समारोहों पर किया जाता था।

अश्वमेघ यज्ञ के दिन जब घोड़े को छोड़ा जाता था 'वीणागणगिन' गाथा गायन किया करते थे। ये गाथा उनकी स्वयं रचित होती थीं। जिनकी विषयवस्तु राजा की प्रशस्ति होती थी। यह गायन ब्राहमण व क्षत्रिय किया करते थे। प्राचीन परम्परा पर अधिष्ठित होने के कारण इन गाथाओं को ऋचाओं के तुल्य माना जाता था।

यस्मिन्देवा अधिविश्वे निपेदु यस्तन वेद किमृचा करिष्यति

इन गाथाओं के गायक गाथिन् कहलाते थे। इसके साथ ही साम गायन का उल्लेख भी ऋग्वेद में बाहुल्य पाया जाता है। ऐसी मान्यता थी कि नियमपूर्वक गाए गए साम द्वारा यज्ञ में जब किसी देव विशेष की स्तुति की जाती थी तो उससे देव प्रसन्न हो जाते

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 1, Year : 4, Apr.-May-Jun. (2017), Pages : 54-59 , ISSN 2348 – 3318
हरप्रीत कौर
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

थे। इन्हीं सामों के आधार पर ऋचाओं का गान किया जाता था। यज्ञ समाप्ति साम गायन के साथ ही होती थी। केवल कण्ठ संगीत अर्थात् बिना किसी वाद्य की संगति के गाया गया 'साम' श्रेष्ठ समझा जाता था। ऋग्वेद में साम की उत्पत्ति पुरुष प्रजापति से मानी गयी हैं। ऋग्वेद में निम्न साम भेदों का उल्लेख मिलता है, यथा वेरुप, रैवत, अर्क, भद्र इत्यादि। इन सामों का गायन यज्ञादि कार्यो के अतिरिक्त अन्य लौकिक प्रसंगों पर किया जाता था।

ऋग्वेद काल में गायन के साथ ही वाद्य का निरंतर साहचर्य था। ऋग्वेद में दुंदुभि, बाग, नाड़ी, वेणु कर्करि, गर्गर, गोधा, पिंग आदि वाद्यों के यत्र तत्र उल्लेख प्राप्त होते हैं। दुंदुभि की धीर गम्भीर ध्वनि का उल्लेख ऋग्वेद में अनेक बार हुआ है। बाण नामक तन्त्री वाद्य वैदिक काल का सर्वाधिक प्रचलित एंव महत्वपूर्ण वाद्य था। इसके लिए 'महावीणा' संज्ञा प्राप्त होती है। इस वीणा की विशेषता उसमें 100 तारों के कारण थी जिसकी तुलना पुरुष की 100 वर्ष की आयु से की गई। प0 क्षितिमोहन सेन के अनुसार 'आघाटि' का अर्थ 'घाट' अर्थात् 'परदों से निर्मित वाद्य' से है।

ऋग्वेद की साक्ष्य से स्पष्ट है कि बैलों की खाल पकाने की कला तथा उसको विविध उपकरणों के लिए योग्य बनाने की कला ऋग्वेद काल में अवगत थी। इससे यह प्रबल अनुमान किया जा सकता है कि वीणा तथा अवनद्ध वाद्यों के लिए उपयोगी चर्म तथा तन्त्रियों बनाने की कला भी उस समय प्रचलित थी।

ऋग्वेद में गीत तथा वाद्य के साथ नृत्यकला का प्रचुर अस्तित्व पाया जाता है। नवोदित उषा की स्वर्णिम आभा को देखकर वैदिक ऋषि को सुसज्जित नर्तकी के विभ्रम का स्मरण हो आता है –

'अधि पेशांसि वपते नृतुरिवा',

नृत्य का कार्यक्रम खुले प्रांगण में तथा उन्मुक्त वातावरण में एकत्रित जनता के सम्मुख होता था, जिसमें नर व नारी दोनों भाग लेते थे। सामूहिक नृत्य से उत्थित होने वाली धूलि का उल्लेख ऋग्वेद में पाया जाता है। महाव्रत नामक सामयोग में दासियों का समूह नृत्य आयोजित होता था, जिसमें कम से कम तीन तथा अधिकाधिक छह नर्तकियाँ होती थी। प्रत्येक नर्तकी मस्तक पर जल भरी गगरी धारण किए हुए बायें से दायें की ओर वर्तुलाकार गति से नृत्य करती थी। विवाह के अवसर पर चार से लेकर आठ तक सुहागनियों को सुरा पिलाकर चतुर्वार नृत्य करने के लिए प्रेरित किया जाता था। विवाह विधि में पत्नी के द्वारा गायन किए जाने का उल्लेख वैदिक वाड्.मय में यत्र तत्र पाया जाता है।

यजुर्वेद में संगीत

यजुर्वेद, ऋग्वेद के पश्चात् रचित दूसरा ग्रंथ है। इस वेद में कुल 1875 ऋचाएँ हैं जिसमें से 663 ऋचाएँ ऋग्वेद से ली गई हैं। यजुर्वेद शब्द यजुस + वेद शब्दों की सन्धि से बना है। यज् का अर्थ 'समर्पण' से होता है। इस वेद में पदार्थ, कर्म, श्राद्ध, योग, इंद्रिय निग्रह आदि के हवन को सर्मपण की क्रिया का उल्लेख है। यजुर्वेद एक ऐसा प्रधान वेद है, जो आज भी जन–जीवन में अपना स्थान किसी न किसी रुप में बनाए हुए है। यह वेद हिन्दू धर्म का एक महत्वपूर्ण श्रुति धर्मग्रंथ है। जिस प्रकार सामवेद सांगितिक पृष्ठभूमि पर आधरित है उसी प्रकार यजुर्वेद संस्कारों एंव यज्ञीय कर्मकाण्डों के मंत्रों को समाहित किए हुए एक अनूठा ग्रंथ है।

Carl Olson states that Yajurveda is a text of mantras (sacred formulas) that are repeated and used in rituals.

यजुर्वेद मुख्य रुप से एक गद्यात्मक ग्रंथ है, यज्ञ में कहे जाने वाले इन मंत्रों का उच्चारण प्रायः उपांशु स्वर में किया जाता रहा है। यद्यपि संगीत के विकास की दृष्टि से यजुर्वेद का कोई महत्व नहीं लक्षित होता, तथापि प्राचीन संगीत विषयक परिस्थिति जानने के लिए तदन्तर्गत उल्लेख कम उपारक नहीं। यजुर्वेद में संगीत को अनेक लोगों की आजिविका का साधन बताया गया है। कहते हैं कि देवताओं का वास्तविक आश्रय स्थान साम है, न कि ऋक् अथवा यजु, तात्पर्य यह है कि देवताओं को प्रसन्न करने के लिए सामगान जितना प्रभावात्मक है, उतना ऋक् अथवा यजु का पठन नहीं। अतः वेद में उल्लेखित ऋचाओं का पाठन स्वर में किया जाए तभी वह सार्थक होगा।

अयज्ञो वा एशः। योऽसामा

अर्थात् जिस यज्ञ में साम गान नहीं, वह यज्ञ अधिधान के लिए पात्र नहीं। सांगीतिक संज्ञा 'स्तोम' का पर्याप्त प्रयोग यजुर्वेद में भी नज़र आता है।

यजुर्वेद में विशिष्ट सामों का सम्बन्ध विशिष्ट ऋतुओं से निर्दिष्ट किया गया है। रथन्तर साम का गायन बसंत ऋतु में विहित है, बृहत्साम का ग्रीष्म ऋतु में, वैरुप का वर्षा ऋतु में तथा शाक्वर और रैवत का हेमन्त ऋतु में। यजुर्वेद का संकलन यज्ञ संबंधी कर्मकाण्ड की सुविधा के लिये हुआ है। सोमयोगों के संबंध में सवन, साम तथा लौकिक संगीत का विस्तृत विवरण यजुर्वेद में पाया जाता है जो तत्कालीन संगीत विषयक उत्कर्ष तथा व्यापक प्रसार का द्योतक है। यजुर्वेद में वर्णित सोमयोग की प्रत्येक क्रिया एंव प्रक्रिया संगीत से समन्वित हुआ करती थी। महत्वपूर्ण प्रसंगों पर उद्गाता स्वयं गान करता था तथा अन्य गौण प्रसंगों पर गायन का दायित्व प्रस्तोता, प्रतिहर्ता तथा उपगाता नामक सहयोगियों को सौंप दिया जाता था। कुछ प्रसंगों पर केवल उद्गाता, कुछ पर केवल प्रस्तोता ही गायन किया करते थे। वृन्दगान में साम के विभिन्न भाग विभिन्न गायकों के द्वारा गाये जाते थे व अंत में उद्गाता

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 1, Year : 4, Apr.-May-Jun. (2017), Pages : 54-59 , ISSN 2348 – 3318
हरप्रीत कौर
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

नामक प्रमुख गायक के स्वर में स्वर मिलाकर समूह गान किया जाता था। यजुर्वेद में सूत, शैलूष, नर्तक, गायक, वीणा वादक, वंशीवादक, शंखध्म, काल्हवादक, दुंदुभिवादक तथा वीणा के लिए वस्त्रावरण बनाने वालों का उल्लेख है, जो संगीत के विभिन्न व्यवसायी वर्गों का स्पष्ट संकेत करते हैं। इन वाद्यों के व्यवसायी कुशल संगीतकारों के विभिन्न वर्ग उस समय निर्मित हुए थे। तालधारी व्यक्तियों के स्वतंत्र वर्ग का उल्लेख 'गणक' नाम से पाया जाता है। नटों के लिए शैलूष संज्ञा थी। गायन का व्यवसाय सूत तथा शैलूष जातियों के द्वारा किया जाता था। शैलूष, नट, नर्तक शब्दों से स्पष्ट है कि नृत्य तथा नाटक की कला उस समय अंकुरित हो चुकी थी।

गीत तथा नृत्य के साथ वीणादि वाद्यों का वादन किया जाता था तथा गीत एंव नृत्य के साथ मात्रा गिन कर ताल देने वाले व्यक्तियों की योजना होती थी। यजुर्वेद में वीणा, बाण, तुणव, दुन्दुभि, भूमिदुन्दुभि, शंख तथा तलव आदि वाद्यों का उल्लेख है। संगीत का विशेष अध्ययन उद्गाता, उसके सहकारी तथा गाथी आदि वर्ग के द्वारा किया जाता था। इनके अतिरिक्त सामान्य परिवार की महिलाओं में भी संगीत का विशेष प्रचार था। शतपथ ब्राहमण का कथन है कि स्त्रियॉ ऐसे ही पुरुष से अनुराग करती हैं, जो संगीत कला में प्रवीण हों। सामगायन के साथ स्वरसंगति तथा वीणा संगति दोनों तत्कालीन महिलाओं की संगीत विषयक कुशलता का संकेत करती है। उद्गाता, उसके दो सहचर गायक, चार उपगायक तथा यजमान पत्नियों का एक स्वर में गायन तथा वाद्यों की संगति तत्कालीन विशाल समूह संगीत का साक्षात्कार कराती है। यजुर्वेद में गन्धर्व तथा अप्सराओं का उल्लेख अर्धदैवत के रुप में किया गया है।

सामवेद में संगीत

चारों वेदों में सामवेद को पूर्ण रुप से संगीतमय माना गया है। सामवेद यद्यपि छोटा है परन्तु एक तरह से यह सभी वेदों का सार रुप है और सभी वेदों के चुने हुए अंश इसमें शामिल किए गए है। सामवेद संहिता में जो 1875 मन्त्र हैं, उनमें से 1504 मंत्र ऋग्वेद के ही है। ऋग्वेद की ऋचाओं के आश्रय पर ही साम गान किया जाता है। 'ऋक्' यदि वाणी है तो 'साम' उसका प्राणभूत है।

श्रीमद्भगवत् गीता में सामवेद को ईश्वर का अंश माना गया है – 'वेदानां सामवेदोस्मि' साम शब्द का मूल अर्थ 'गान' अर्थात् 'गेय वस्तु' से है, अर्थात् 'जो मन्त्र गाए जाते है वह साम है'।

सामवेद के दो प्रधान भाग हैं – आर्चिक तथा गान। आर्चिक ग्रंथ साम के साहित्य मात्र का संकेत करते हैं तथा गान ग्रंथ साम के स्वरमय स्वरुप के द्योतक है। सामवेद अपने आर्चिक तथा गान दोनों ही भागों के लिए महत्वपूर्ण है। संगीत की दुनिया में गान ग्रंथ भाग का अत्यंत महत्व है चूँकि साम का प्राणभूत तत्व स्वर ही है। साम का आरम्भ 'ओम्' स्वर से किया जाता है। ओम् को वैदिक काल से ही आधार स्वर माना गया है। इस स्वर का अभ्यास ही गायक को बल व स्थायित्व प्रदान करता है। ऐसी मान्यता है कि साम गायन प्रारम्भ में उदात्त, अनुदात्त व स्वरित इन तीन स्वरों में किया जाता था। समय उपरांत स्वर संख्या 3 से बढ़कर 7 हो गई। ये 7 स्वर क्रमशः कुष्ट, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतृर्थ, मंद्र तथा अतिस्वार्य थे। सामवेद में सात स्वरों के लिए 'सप्तधातु' संज्ञा का प्रयोग यत्र तत्र प्राप्त होता है।

अग्निपुराण के अनुसार सामवेद के विभिन्न मंत्रों के विधिवत जप आदि से रोग व्याधियों से मुक्त हुआ जा सकता है। ऋषियों ने विशिष्ट मंत्रों का संकलन करके गायन की पद्धति विकसित करी। सामवेद से ही संगीत को नियमबद्ध रुप प्रदान किया गया। आधुनिक विद्वान् भी इस तथ्य को स्वीकार करने लगे हैं कि समस्त स्वर, ताल, लय, छंद, गति, मंत्र, स्वर चिकित्सा, राग नृत्य मुद्रा, भाव आदि सामवेद से ही निकले हैं।

सामवेद के मंत्रों का गायन यदि स्वर व वर्ण विहिन होता तो वह यजमान के लिए अत्यंत अर्नथकारक माना जाता था। सामगायन पूर्णतः धार्मिक प्रतीत होता है, उसकी विषयवस्तु देवस्तुति संबंधी ऋचाऍ थी। गायन के साथ साथ वादन का भी साम वेद में उल्लेख मिलता है।

वाद्य प्रायः चार भागों में विभक्त किए जाते है – तत्, सुशिर, घन, अवनद्य। इन्हीं चार भागों के मिश्रण से अन्य प्रकार के वाद्यों का निर्माण होता है व वाद्यों के अन्य भेद नजर आते हैं। सामवेद में भी इन वाद्य प्रकारों का उल्लेख मिलता है। तंत्री वाद्य सामवेद काल का प्रमुख वाद्य है। तंत्री वाद्यों में कन्नड़ वीणा, कर्करी वीणा तथा बाण वीणा का सर्वाधिक प्रयोग होता था। ऋग्वेद काल में उल्लेखित बाण का प्रयोग सामवेद काल में भी पर्याप्त मात्रा में होता था। बाण नामक वीणा का वादन सम्भवतः आज के शन्तूर की भॉति लकड़ी की शाखा द्वारा होता था। यज्ञ के अवसर पर इसका वादन, गायन के साथ अथवा स्वतंत्र भी होता था। यह वाद्य प्रत्येक अवसर पर बजने वाला महत्वपूर्ण वाद्य था। कर्करी एक ऐसा फल है जो पानी में होता है तथा इसकी पैंदी में छिद्र होता है। सम्भवतः इससे बनी वीणा को ही कर्करी वीणा कहा गया।

अवनद्य वाद्यों में दुन्दुभि, आडम्बर, वनस्पति वाद्यों का उल्लेख सामवेद में हुआ है। दुन्दुभि ऋग्वेद काल में ही अस्तित्व में आ गई थी। दुन्दुभि का वादन दण्ड से किया जाता था जिसका नाम आह्नन था। वैदिक काल में वीरों के उत्साह वर्धन के लिए दुन्दुभि का प्रयोग होता था। इसके साथ ही सामगायन में भी दुन्दुभि विशेष स्थान रखती थी। वाजपेय यज्ञ में जब साम का तीन बार ब्राहमण

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 1, Year : 4, Apr.-May-Jun. (2017), Pages : 54-59 , ISSN 2348 – 3318
हरप्रीत कौर
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

गायन करता था तो वेदी के समीप बंधी 17 दुन्दुभियॉ बजाई जाती है। सुशिर वाद्यों में तुणव, नाड़ी, बंकुरा आदि विभिन्न प्रकार की वंशियों का प्रयोग सामवेद काल अथवा वैदिक काल में होता था। इस काल में वंशी वादन हेतु बहुधा 'तूणव' संज्ञा प्रयुक्त की गई है। नाड़ी भी इसी वंशी वाद्य का पर्याय था जिसका अर्थ नरकट की बनी वेणु से था। यमराज को प्रसन्न करने के लिए नानी का वादन किया गया था।

'गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीतमुच्यते' संगीत रत्नाकर की इन पंक्तियों से स्पष्ट होता है कि यदि संगीत कहीं विद्यमान हैं तो वह गायन, वादन व नृत्य तीनों के सम्मिश्रण में। बिना वाद्य के किया नृत्य निरर्थक होगा तथा बिना नृत्य के केवल वादन अत्यधिक प्रभावशील नहीं होगा। जब गायन, वादन व नृत्य तीनों मिलकर प्रस्तुत होते हैं तो वह संगीत का वास्तविक रुप होता है, साथ प्रभावशील भी। सामवेद काल में भी नृत्य के अनेक उल्लेख नज़र आते है।

The classical Indian music and dance tradition consider the chant and melodies in samavedas one of its roots.

वैदिक काल में रज्जू नृत्य, अरुण नृत्य, पुष्प नृत्य, बसन्त नृत्य आदि प्रचलित थे। नर्तकों का एक स्वतंत्र वर्ग था जिन्हें बल प्राणियों की तालिका में समाविष्ट किया गया था। इनके लिए शैलूष संज्ञा भी प्राप्त होती है।

अथर्ववेद में संगीत

अथर्ववेद अन्य तीनों वेदों से पूर्ण रुप से भिन्न है। इस वेद में 730 ऋचाएँ व 6000 मंत्र हैं जिसमें देवताओं की स्तुति के साथ जादू, चमत्कार, चिकित्सा, विज्ञान और दर्शन के मंत्र हैं। भूगोल, खगोल, आयुर्वेद, अर्थशास्त्र, राजनीति, शल्सचिकित्सा आदि सैकड़ों लोकोपरक विषयों का निरुपण अथर्ववेद में है। आयुर्वेद की दृष्टि से अथर्ववेद का महत्व अत्यंत सराहनीय है। अथर्ववेद को ब्रहमवेद, अंगिरावेद, अर्थवागिरस वेद भी कहा जाता है। अथर्ववेद के विषय में कुछ मुख्य तथ्य निम्नलिखित हैं –

- अथर्ववेद की भाषा और स्वरुप के आधार पर ऐसा माना जाता है कि इस वेद की रचना सबसे बाद में हुई।
- इसमें ऋग्वेद व सामवेद से भी मंत्र लिए गए हैं।
- जादू से सम्बन्धित तन्त्र–मन्त्र, राक्षस, पिशाच आदि भयानक शक्तियॉ अथर्ववेद के महत्वपूर्ण विषय हैं।
- अथर्ववेद से स्पष्ट है कि कालान्तर में आर्यों में प्रकृति पूजा की उपेक्षा हो गयी थी और प्रेत आत्माओं व तन्त्र मन्त्र में विश्वास किया जाने लगा था।

अथर्व शब्द का अर्थ सामान्य रुप से 'स्थिरता' होता है, चंचलता रहित। निरुक्त के अनुसार अथर्व शब्द में थर्व धातु है, जिसका अर्थ है गति या चेष्टा। इस प्रकार अथर्वन् का अर्थ हुआ गतिहीन या स्थिर। इसका अभिप्राय है कि जिस वेद में स्थिरता या चित्तवृत्तियों के निरोधरुपी योग का उपदेश है वह अथर्वन् वेद है – ''अथर्वाणोऽथर्वणवन्तः''।

The Atharvaveda is sometimes called the "veda of magical formulas."

पाश्चात्य मनीषियों के अनुसार इसका अथर्वागिरस नाम यथार्थ है, अथर्वन् संज्ञा उन मंत्रों के लिए है सुखमूलक व मंगलप्रय हैं। अथर्ववेद में भी संगीत सम्बन्धी विषय का कुछ अंश परिलक्षित होता है। संगीतात्मक वेद न होते हुए भी यत्र तत्र अथर्ववेद में संगीत संबंधी संज्ञाओं का प्रयोग हुआ है। जो कि यह खोजने में सहायता करता है कि अथर्ववेद में भी संगीत अपना स्थान बनाए हुए है। अथर्ववेद में व्रात्य का सम्बन्ध मागध से बताया गया है। व्रात्य का सामों से तथा मागध से सम्बन्ध उसकी संगीतप्रियता के द्योतक माने जा सकते हैं। मागधों का उल्लेख 'सुकण्ठ' गायक के रुप में अन्यत्र पाया जाता है तथा इसी कारण सम्भवतः उनका कार्य राजभाषाओं में गाथागान तथा प्रातः कालीन प्रबोधन संगीत का मान रहा है। विशिष्ट सामों तथा स्तोभों के अतिरिक्त गाथा, नाराशंसी, रैभी आदि लौकिक गीत प्रकारों का उल्लेख अथर्ववेद में उपलब्ध होता है। गाथा, नाराशंसी आदि लौकिक गीतों का गान विवाहादि प्रसंगों पर किया जाता था। सूर्य की विवाह यात्रा के अवसर पर जिन गीतों का गान किया गया था उनमें रैम्य, नाराशंसी तथा गाथा आदि गीत प्रकार सम्मिलित थे। यात्रा के साथ नानाविध आमोद–प्रमोद के साथ से गीत कुशल गायकों के द्वारा बड़े उल्लास के साथ गाऐ जाते थे। विविध व्यवसायों के अवसर पर व्यवसायी जन मनोविनोद के लिए तत्सम्बन्धी गीत गाया करते थे। बुनाई के अवसर पर स्त्रियों के द्वारा किये जाने वाले गान का संकेत भी अथर्ववेद के मन्त्रों से प्राप्त होता है। गीत वाद्य तथा नृत्य की सामूहिक ध्वनि का संकेत निम्न मंत्र से हुआ है –

यस्यां गायन्ति नृत्यन्ति भूम्यां मर्त्या ब्यैलवाः।

अथर्ववेद में गन्धर्व व अप्सराओं का दैवीकरण विशद रुप से पाया जाता है। अप्सरागण गन्धर्वो की पत्नियॉ हैं तथा सदैव नृत्यशील एंव तेजस्विनी होती हुई सर्वत्र प्रमोद का प्रसार करती हैं।

वाद्यों के अन्तर्गत आघाट, कर्करी, दुन्दुभि का उल्लेख अथर्ववेद में स्थान स्थान पर मिलता है। गंधर्व लोक इन वाद्यों की ध्वनि से सदैव प्रतिध्वनित होता रहता था।

युध्यन्ते यस्यामाक्रन्दो यस्यां वदति दुन्दुभि

शत्रुओं को परास्त करने वाले साधनों में दुन्दुभि का विशेष विवरण अथर्ववेद में मिलता है। दुन्दुभि की गर्जना वीरों के हृदय में

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 1, Year : 4, Apr.-May-Jun. (2017), Pages : 54-59 , ISSN 2348 – 3318
हरप्रीत कौर
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

पौरुष तथा शत्रुओं के हृदय में आतंक का संचार एक साथ ही करती थी। अथर्व कालीन दुन्दुभि काष्ठ से बनाई जाती थी व उसका मुख चर्म से मढ़ा जाता था जिससे उसकी घोष या गुंज समस्त दिशाओं में परिव्याप्त होती थी।

चारों वेदों में संगीत का पुट पूर्ण रुप से नज़र आता हैं। संगीत का जो स्वरुप वेदों में उल्लेखित हैं वह वर्तमान में भी अपनी विशेषता बनाए हुए है। ऋग्वेद काल से लेकर अथर्ववेद काल तक गायन शैली, नृत्य शैली तथा वाद्यों में समानता पाई जाती है। समय के साथ परिवर्तन अवश्य होता गया पर संगीत का आधार वौदिक काल से लेकर वर्तमान काल तक वही है। हमारे चारों वेदों में संगीत के विकास का चक्र नजर आता है। चारों वेदों में वर्णित वीणा तथा दुन्दुभि का उल्लेख इस बात का साक्ष्य है कि वाद्यों में कोई विशेष परिवर्तन वौदिक काल में नहीं हुआ है।

वौदिक काल में उल्लेखित मुख्य वाद्य

वीणा

शंख

वीणा

दुन्दुभि

संदर्भ ग्रंथ

- डा0 परांपजे श्रीधर शरच्चन्द्र, भारतीय संगीत का इतिहास
- डा0 कुमार राज, नो द वेदास एट ए ग्लॉन्स, पृष्ठ 43, आई0 एस0 बी0 एन0 81–223–0848–1
- डॉ शर्मा मृत्युंजय, संगीत मैनुअल, आई एस बी एन : 81–86351–54–**X**
- रॉल्फ ग्रीफीथ, अथर्ववेद, भाग 1 पृश्ठ 351
- लौरी पैटोन, 2004, वेदा एण्ड उपनिषद, इन द हिन्दू वर्ल्ड, आई0 एस0 बी0 एन0 0 415215277
- औल्सन कार्ल, 2007, द मैनी कलर्स ऑफ हिन्दुइस्म, आई0 एस0 बी0 एन0 978–0813540689
- बैक गाए, 1993, सोनिक थिओलौजी : हिन्दुइस्म एण्ड सैक्रड साउण्ड, आई0 एस0 बी0 एन0 978–0872498556
- वामन शिवराम, 1965, द प्रौक्टिकल संस्कृत डिक्शनरी, आई0 एस0 बी0 एन0 81–208–0567–4
- उदृधृत अप्रबुद्ध, ऋग्वेदाचा संदेश, पृष्ठ 232
- द्र0 उपाध्याय बलदेव, वौदिक साहित्य पृष्ठ 135